

भारत में सतत विकास की शिक्षा में आने वाली बड़ी चुनौतियां

डॉ. विनीता त्यागी

प्रिंसिपल

बीकान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मेरठ

संपर्क नंबर: 7417289458

ईमेलआईडी: drvinitatyagi2014@gmail.com

सार: आज के दौर में सबसे जरूरी कामों में से एक है हमारे ग्रह के संसाधनों को टिकाऊ बनाना और साथ ही मनुष्यों का कल्याण सुनिश्चित करना। इसकी जरूरत बहुत स्पष्ट है कि हमारी शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी व कुशल बनाने की जरूरत है। इस काम में स्कूल समुदाय के हर सदस्य को जागरूक करना आवश्यक है कि वे हर परिस्थिति में अपने रोल को समझें। शिक्षा को सतत विकास का मुख्य साधन माना जाना चाहिए। सिर्फ सतत विकास की बातें कर लेना काफी नहीं है, बल्कि हमें इसे अमल में लाना होगा। इसे अकेले नहीं, बल्कि मिलकर करना होगा।

हमें अपनी पढ़ाई के हर पहलू का फिर से निरीक्षण करने की जरूरत है। पिछले वर्षों में बनाए गए स्कूल पाठ्यक्रम सतत शिक्षा के विचारों को ध्यान में रखते हुए गठित किए गए हैं, पर इन्हें सही से लागू करना अनिवार्य है। इस लेख में हम संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs), खासकर SDG 4—समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा—पर केंद्रित हैं। इस लेख में इस विषय पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया है, अपने अनुभव साझा किए हैं, और साथ ही मौजूदा सिद्धांतों और मॉडलों का उल्लेख किया है। इस प्रयत्न में, साथ ही उन चुनौतियों का भी उल्लेख किया है जिनका सामना स्कूल, विश्वविद्यालय व शिक्षण संस्थान कर रहे हैं। साथ ही, वे सफल अभ्यास भी बताए गए हैं, जिन्हें अपनाकर शिक्षा को सतत बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: सतत विकास, शिक्षा प्रणाली, समुदाय, अभ्यास, जागरूकता, गुणवत्ता, विकास, अनुभव।

प्रस्तावना: पर्यावरण की स्थिरता हासिल करने के लिए शिक्षा आवश्यक है। बिना शिक्षा के स्थायी विकास संभव नहीं। आर्थिक वृद्धि और उपभोग की प्रवृत्तियों में साफ दिखता है कि स्थिर भविष्यों के प्रति दृष्टिकोण की कमी है। इस चुनौती का सामना करने के लिए, जनता में जागरूकता, ज्ञान, रवैया और व्यवहार में सकारात्मक बदलाव जरूरी है। यह बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही आ सकता है। संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में सतत विकास लक्ष्य (SDGs) की घोषणा की, जिसमें विश्व के कई देश शामिल हुए और इन लक्ष्यों पर सहमति जताई। तब से अब तक इन लक्ष्यों की महत्ता को लेकर दुनिया में चर्चा चल रही है।

लोग आशंकित होते हैं कि ये लक्ष्य संभव हैं या नहीं। 2000 से 2015 तक चले मिलेनियम विकास लक्ष्यों (MDGs) में कई प्रगति हुई, पर कई कमियां भी रहीं, जिनकी वजह से वे सफल नहीं हो सके। इसके बाद SDGs की घोषणा हुई, जिसमें 17 लक्ष्य और 169 उपलक्ष्य हैं। इसे एजेंडा 2030 कहा गया, जिसका नारा है, 'किसी को भी पीछे न छोड़ें'। इसलिए, यह बहुत जरूरी है कि हम MDGs में की गई गलतियों से सबक लें और SDGs में उन्हें दोहराने से बचें। हमें सीखना होगा कि, उन गलतियों को रोके और MDGs से मिली सफलता को SDGs के सफल क्रियान्वयन में दोहराएं। इन गलतियों में से सबसे बड़ा था कि शिक्षा का प्रयोग स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए नहीं किया गया। यह नहीं कि इस क्षेत्र में प्रयास नहीं हुए, बल्कि यह है कि हमारी स्कूल की पढ़ाई अधिकतर थ्योरी पर आधारित है और व्यावहारिक नहीं है। इसे हम कह सकते हैं, 'सतत विकास का शिक्षण', क्योंकि इसमें दो बातें हैं। पहला, क्यों सतत विकास जरूरी है, और दूसरा, क्या कदम उठाने हैं। सतत विकास के लिए शिक्षा हमें जिम्मेदार नागरिक बनाती है। इससे हम एक सुरक्षित, स्वस्थ और जीवन योग्य दुनिया बनाने में मदद कर सकते हैं, जो आज और आने वाली पीढ़ियों के लिए अच्छी हो।

विधियाँ: यह समीक्षा लेख शिक्षण के लिए स्थायी विकास पर केंद्रित है वर्तमान में मौजूद खामियों को पहचाना जाए और नए शोध की दिशा तय की जाए। इस प्रक्रिया के लिए नैरेटीव अधिकृत समीक्षा विधि का चयन किया गया है। इसमें संबंधित साहित्य के परिणाम और निष्कर्षों का मूल्यांकन किया जाता है। वर्तमान स्थिति का अवलोकन किया जाता है और लेखक के अनुभव और क्वालिटेटिव तथ्यों के आधार पर विचार साझा किए जाते हैं।

गुणवत्ता शिक्षा और सतत विकास लक्ष्य: सतत विकास लक्ष्य 4 (SDG4) सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा का समर्थन करता है। यह शिक्षा को मानव अधिकार, बाल अधिकार और शिक्षा के लिए वैश्विक घोषणाओं से जोड़ता है, जैसे 'विश्व मानवाधिकार घोषणा', 'बाल अधिकार सम्मेलन', 'सभी के लिए शिक्षा का विश्व घोषणा', 'डाकार ढांचा', और 'मिलेनियम विकास लक्ष्य'। यह शिक्षा को राष्ट्र और व्यक्तियों की भलाई के लिए आवश्यक मानता है।

SDG 4 का उद्देश्य है कि सभी बच्चे, लड़के और लड़कियों को 2030 तक मुफ्त और समान गुणवत्ता की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा मिल सके। इनका मकसद है कि सभी को अच्छे प्रारंभिक विकास, देखभाल और प्री-प्राइमरी शिक्षा का अवसर मिले। साथ ही, महिलाएं और पुरुष उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी, व्यावसायिक और पोस्टसेकंडरी शिक्षा पा सकें। 2030 तक, इसे लैंगिक भेदभाव को खत्म करना है और वंचित समूह, जैसे विकलांग, आदिवासी और अनिश्चित परिस्थिति में रहने वाले बच्चों को समान अवसर देना है।

सभी युवा और बड़े, दोनों, पढ़े और गणित में निपुण बनें। शिक्षा में ऐसा माहौल तैयार किया जाए कि हर कोई सतत विकास, मानवाधिकार, लैंगिक समानता, शांति, वैश्विक नागरिकता और सांस्कृतिक विविधता को समझ सके। ये लक्ष्य भी शामिल हैं।

शिक्षा और स्थिरता के बीच संबंध:

- शिक्षा और सतत विकास का रिश्ता जटिल है। यह समझना आसान नहीं है। किसी भी देश की सफलता का आधार उसकी शिक्षा प्रणाली पर है। यदि शिक्षा मजबूत है, तो विकास लक्ष्य पूरे किए जा सकते हैं। बिना सही योजना और रणनीति के लक्ष्य सिर्फ ख्वाब रह जाते हैं। आवश्यक है कि शिक्षा को सिर्फ कागजी दस्तावेज़ न माना जाए।
- शिक्षा को एक ताकत के रूप में देखा जाता है। यह जीवन स्तर सुधार सकती है। रोजगार के अवसर बढ़ा सकती है। महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकती है। पर्यावरण की सुरक्षा कर सकती है। यह सभी उम्र के लोगों को शिक्षा दे सकती है। इससे पढ़ाई छोड़ने की प्रवृत्ति कम होगी।
- शिक्षा के बिना, कोई भी लक्ष्य संभव नहीं है। यह विकास का आधार है और उसके बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। किताबों में नहीं बल्कि समाज में इसका प्रयोग जरूरी है। शिक्षक, विद्यार्थी, और सरकार मिलकर सही दिशा में कदम बढ़ाएं। तभी सही परिणाम मिलेंगे।
- स्थायी विकास के लिए शिक्षा जरूरी है। यह मुख्य उपकरण और मार्ग है जो हमें सतत विकास के लक्ष्य हासिल करने में मदद करता है। बीते दो दशकों में, कई अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों, कार्यशालाओं, सेमिनारों और संगोष्ठियों का आयोजन हुआ है, जिनका उद्देश्य शिक्षा के महत्व को रेखांकित करना और बढ़ावा देना है। 2015 में घोषित सतत विकास लक्ष्य (SDGs) बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। इनके प्रचार-प्रसार के लिए भारी प्रयास और संसाधन लगाए गए हैं। ये लक्ष्य केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि पाँच पी—रूख, ग्रह, समृद्धि, शांति और साझेदारी—पर केंद्रित हैं।
- यह समझना जरूरी है कि नीतिगत प्रयास और तकनीकी नवाचारों के साथ-साथ, सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना, व्यवहार में बदलाव लाना और व्यापक जन जागरूकता जरूरी है। इस संदर्भ में, शिक्षा और उससे जुड़ी गतिविधियाँ, जैसे प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण, संचार, वैज्ञानिक अनुसंधान, जानकारी का साझा करना, नेटवर्किंग और साझेदारी, अहम भूमिका निभाती हैं। ये प्रयास सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं।
- साथ ही, व्यवहार में बदलाव के साथ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को भी समझना जरूरी है। कई ईएसडी (शैक्षिक व्यवस्था के माध्यम से सतत विकास) कार्यक्रम लोगों के रवैए और विश्वासों में सुधार लाने का लक्ष्य रखते हैं। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि समर्थन का माहौल, सामाजिक नियम, कठिनाई और आदतें व्यवहार

को प्रभावित करते हैं। यदि सोच बदलनी है, तो शिक्षा को सिर्फ विचारधारा तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। यह लोगों को उनके मूल्यों के अनुरूप कदम उठाने में भी मदद करनी चाहिए। अध्ययन में दिखाया गया है कि रवैए और व्यवहार में संबंध कमजोर हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए, स्कूलों में सतत विकास की शिक्षा के कार्यक्रम बनाना उचित होगा।

- अभी के दौर में शिक्षा का लक्ष्य 21वीं सदी की आवश्यक कुशलताओं को विकसित करना है। इससे शिक्षा के स्तर व परिणामों में सुधार होता है। दुनिया तेजी से बदल रही है। इन बदलावों का सामना करने के लिए, इन कुशलताओं का होना जरूरी है।
- कुछ चुनौतियां भी कारगर हैं। जैसे, स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति, तेज़ युवा बेरोजगारी, असमर्थ मानव संसाधन, सुधार की जरूरत, शहरीकरण और बहुसांस्कृतिक माहौल। इन समस्याओं का हल ढूँढने के लिए, स्कूल की पढ़ाई और संसाधनों को अपडेट करना जरूरी है। साथ ही, शिक्षण विधियों में भी बदलाव लाना चाहिए।

कोविड-19, शिक्षा और सतत विकास: कोविड-19 ने हमें देश की असली चुनौतियों का अनुभव कराया। इस महामारी के कारण विश्व ने फिर से सतत विकास लक्ष्यों पर सोचने का मौका पाया है। स्कूल लगभग दो साल से बंद हैं, न सिर्फ हमारे देश में बल्कि पूरे विश्व में। हमने कभी नहीं सोचा था कि ऐसी स्थिति भी देखनी पड़ेगी। स्कूल बंद रहने से बड़ी सी रुकावट आई है, जिन्हें पूरी करने में फिर कई साल लगेंगे।

बेशक, डिजिटल और तकनीकी क्षेत्रों में नई शुरुआत हुई है। भारत में कई नए प्रयास और उपकरण शिक्षण के लिए शुरू किए गए हैं। लेकिन देश के दसियों मिलियन छात्र आज भी बिना नेटवर्क, मोबाइल या कक्षा के हैं। यहाँ पहले बुनियादी शिक्षा देना जरूरी है, तभी सतत विकास के लक्ष्यों की दिशा में ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

सतत विकास की परिभाषाएँ इस तरह मिलती हैं कि वर्तमान की जरूरतें पूरी करने के साथ-साथ भविष्य की जरूरतों का भी ध्यान रखा जाए। लेकिन कोविड-19 के अनुभव ने दिखाया है कि हमें अपने नागरिकों की बुनियादी जरूरतें पूरी करने में लंबा वक्त लगेगा। इससे सवाल उठता है कि हम 2030 तक SDGs को प्राप्त करने का वादा कैसे निभाएँगे। क्या हम कोरोना से मिली सीख को समझ कर सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और सतत विकास के प्रति उसकी दृष्टि:

- 2020 में शुरू हुई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) भारत की पहली 21वीं सदी की शिक्षा नीति है। इसमें सतत विकास शिक्षा का खास ध्यान रखा गया है। NEP का लक्ष्य है सभी के लिए समावेशी और समान शिक्षा उपलब्ध कराना, जिससे वह 4वाँ सतत विकास लक्ष्य हासिल हो सके। यह नीति देश में शिक्षा प्रणाली को नए तरीके से ढालने पर ज़ोर देती है।
- NEP 2020 ने पर्यावरण शिक्षा को मुख्य हिस्सा बनाया है। यह जीवविविधता, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों को भी शामिल करती है। खासतौर पर, यह शिक्षकों को सतत विकास का प्रशिक्षण देने और जागरूक बनाने पर जोर देती है। इसमें पर्यावरण की पढ़ाई अनिवार्य कर दी गई है।
- NEP का लक्ष्य है कि शिक्षण इससे स्थायी रोजगार और आर्थिक विकास को बढ़ावा दे। इससे पहले भी, सतत शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयास हुए हैं। पेसिफिक एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट फ्रेमवर्क ने अनेक क्षेत्रों में सुधार की पहचान की है।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का उद्देश्य सतत विकास है। NEP लागू होने में अभी वक्त है। तब तक, सरकार और स्कूल अच्छा अभ्यास अपना सकते हैं। शिक्षण पद्धतियों में सतत विकास को शामिल करने का प्रयास किया जा सकता है। हर शिक्षण संस्थान इसे अपने कार्यक्रम का हिस्सा बना सकता है।

भारत में ईएसडी में आने वाली चुनौतियां: इसके बावजूद कि ईएसडी (सस्टेनेबल डिवेलपमेंट एजुकेशन) को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण माना जाता है, अभी तक इस क्षेत्र में खास प्रगति नहीं हुई है। इसके पीछे कई कारण और कारक हैं। मुझे विश्व विद्यालयीय स्कूल प्रवक्ताओं और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क (UNSDSDN) के कार्यकर्ताओं से हुई बातचीत में भी ये बातें स्पष्ट हुईं। वे अपने अनुभव से बताते हैं कि भारत में ईएसडी लागू करने में कई मुख्य बाधाएँ हैं, जिनमें से कुछ यहाँ उल्लेखित हैं:

1. **जागरूकता की कमी:** ग्रामीण भारत में विद्यालयों में काम कर रहे जागरूकता प्रतिनिधियों से बात करने पर पता चला कि सतत विकास लक्ष्यों और शिक्षा की भूमिका के बारे में जागरूकता फैलाने की जरूरत है। SDGs की घोषणा को छह साल से अधिक हो चुके हैं, फिर भी ग्रामीण शिक्षक समुदाय इन लक्ष्यों से अनजान हैं। शिक्षण समुदाय को समझना जरूरी है कि साक्षरता और शिक्षण व्यवस्था का नया रूप कैसे तैयार किया जाए, ताकि स्थिरता हासिल करना संभव हो सके।
2. **पाठ्यक्रम में ईएसडी का अभ्यास:** यह स्पष्ट होना चाहिए कि ईएसडी को पूरे स्कूल पाठ्यक्रम में किस तरह एक जैसा लागू किया जाएगा। देश को सुनिश्चित करना चाहिए कि यह सिर्फ किताबों में न हो, बल्कि बच्चे इन

अवधारणाओं को समझें और याद करने की बजाए, उनके अनुसार कर्म भी करें। ईएसडी का अभ्यास होने का मतलब है, इसे सही तरीके से अपनाना, न कि केवल पढ़ाना।

3. **ईएसडी के विचार को सरल बनाना:** इसे समझना जरूरी है कि ईएसडी का अर्थ सरल भाषा में समझाया जाए। कई अध्ययन दिखाते हैं कि विशेषज्ञ इस अवधारणा की जटिलता को समझाना चाह रहे हैं। जटिलता से फायदा नहीं होता, उसे आसान और छोटे कदमों में तोड़ा जाना चाहिए। 17 लक्ष्यों की विशालता को देखते हुए, छात्र भी समझें कि छोटे-छोटे प्रयास किस तरह टिकाऊ विकास में मदद कर सकते हैं। जब सभी बच्चे छोटे-छोटे कदम उठाएंगे, तभी हम स्थिरता प्राप्त कर पाएंगे।
4. **समुदाय की भागीदारी:** ईएसडी को स्थानिक संदर्भ में देखना जरूरी है। बिना समुदाय की भागीदारी के इसे सफल बनाना संभव नहीं है। स्थानीय लोग जानें कि ईएसडी क्या है, स्कूल में कौन-कौन सी गतिविधियाँ हो रही हैं, वे अपने बच्चों से शिक्षा में हो रहे बदलावों को समझें, तभी ईएसडी का प्रभाव दिखेगा।
5. **साझा स्वामित्व और साझेदारी का अभाव:** कोई भी क्षेत्र स्थायी विकास का जिम्मा नहीं लेता, यह मानना गलत है। सभी सरकारी और निजी क्षेत्रों को मिल कर काम करना चाहिए। विभागों के बीच तालमेल मजबूत होना चाहिए, और सार्वजनिक-निजी समर्पित भागीदारी होनी चाहिए। सीएसओ का भी इसमें योगदान जरूरी है। सहयोग की कमी से ईएसडी का सही क्रियान्वयन मुश्किल होता है।
6. **वित्तीय संसाधनों और सामग्री का अभाव:** भारत शिक्षा में निवेश कर रहा है, पर अभी भी जरूरत के अनुरूप अनदेखी के क्षेत्र हैं। अध्यापकों की प्रशिक्षण, शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम विकास में निवेश और समर्थन की व्यवस्थाएँ सिर्फ वित्तीय मदद से ही बेहतर हो सकेंगी। संसाधनों की कमी में स्थिरता के लिए लंबे समय तक कार्य करना कठिन हो जाता है।

परिणाम, चर्चा और चुनौतियों के समाधान के सुझाव:

1. **जागरूकता फैलाना:** सबसे पहले लोगों में ईएसडी के बारे में जागरूकता फैलानी चाहिए। यदि उन्हें स्थिरता और शिक्षा का अर्थ नहीं पता, तो सही दिशा में बढ़ना मुश्किल होगा।
2. **प्रभावी ईएसडी पाठ्यक्रम:** इस पाठ्यक्रम का मकसद स्कूल समुदाय और हितधारकों में सही रवैया, कौशल और व्यवहार विकसित करना है। इसे सादा, स्पष्ट और क्रियाशील होना चाहिए। स्थिरता से जुड़ी गतिविधियों को भी इसमें शामिल करना जरूरी है।

3. **समुदाय की भागीदारी बढ़ाना:** शिक्षकों को स्थानीय संदर्भ को ध्यान में रखना चाहिए। स्कूल प्रबंधन समितियों में समुदाय के सदस्यों को शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही देखना चाहिए कि कैसे स्थानीय समुदाय स्कूल की गतिविधियों में भाग ले सकता है और स्थिरता में योगदान कर सकता है।
4. **स्थिरता मंच:** मौजूदा मंच, प्लेटफार्म और समिति को फिर से संरचित कर ईएसडी को बढ़ावा देना चाहिए। बाल संसद, बाल सभा, बच्चे मंडल और स्कूल प्रबंधन समिति जैसे प्लेटफार्म पूरे साल स्थिरता के प्रोजेक्ट चलाने चाहिए। इससे सभी हितधारकों का हिस्सा बढ़ेगा।
5. **नेटवर्किंग, साझेदारी और सहयोग:** सरकार, प्राइवेट सेक्टर, सिविल सोसाइटी, संस्थान और अन्य जुड़े लोगों के बीच मजबूत सहयोग होना जरूरी है। इससे क्षमता बढ़ेगी और संसाधनों की कमी पूरी होगी।

अंत में, शिक्षा स्थायी विकास का मुख्य हथियार है। यह बदलाव लाने का सबसे शक्तिशाली साधन है। स्कूलें स्थिरता को शिक्षा का हिस्सा बनाकर बड़ा योगदान कर सकती हैं। यह लेख पहले से किए गए अध्ययनों, अच्छी प्रथाओं और अनगिनत बाधाओं को दर्शाता है। यह दिखाता है कि कैसे इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है। इसमें हम यह भी बताते हैं कि सतत विकास के लिए जरूरी कदम क्या हैं। यह उद्देश्य है कि हम केवल शिक्षा के बारे में न सोचें बल्कि शिक्षा को स्थिरता का माध्यम बनाएं।

निष्कर्ष: भारत में सतत विकास की शिक्षा को लागू करना आज जरूरी हो गया है। अभी बहुत सी चुनौतियाँ सामने हैं। पारंपरिक पाठ्यक्रम की पहुंच और शिक्षकों का इसके विषय में प्रशिक्षण अभाव प्रमुख बाधाएँ हैं। साथ ही, जागरूकता का अभाव, सीमित वित्तीय और तकनीकी संसाधन, और सामाजिक-सांस्कृतिक रुकावटें भी रुकावट बन रही हैं। ग्रामीण और शहरों के बीच संसाधनों का असमान वितरण भी सतत विकास की शिक्षा के प्रसार में बाधा है। इसके अलावा, छात्रों में पर्यावरणीय और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता विकसित करना भी कठिन है। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए शिक्षा नीति में बदलाव जरूरी है। शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक और गतिविधि-आधारित शिक्षण प्रणाली को बढ़ावा देना चाहिए। साथ ही, समाज में सतत विकास के प्रति जागरूकता फैलाने के प्रयास भी जरूरी हैं। अगर इन चुनौतियों को योजनाबद्ध तरीके से हल किया जाए और सतत विकास की शिक्षा हर स्तर पर अनिवार्य बनाई जाए, तो हम एक बेहतर समाज बना सकते हैं। यह समाज पर्यावरण, न्याय और आर्थिक स्थिरता के सिद्धांतों के साथ आगे बढ़ेगा।

संदर्भ सूची:

1. शर्मा, सीमा (2021)। *सतत विकास हेतु पर्यावरण शिक्षा*। वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. मिश्रा, राकेश (2020)। "शिक्षा में सतत विकास की अवधारणा और भारतीय परिप्रेक्ष्य।" *शिक्षा विमर्श*, खंड 12(3), पृष्ठ 45-52।
3. भारत सरकार। (2019)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (प्रारूप)*। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. चौधरी, कविता (2023)। *सतत विकास: सिद्धांत और भारतीय चुनौतियाँ*। जयपुर: राजस्थान पब्लिकेशन।
5. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी)। (2018)। *सतत विकास लक्ष्य: भारत रिपोर्ट*। नई दिल्ली: यूएनडीपी इंडिया।
6. सिंह, नीरज (2019)। "ग्रामीण भारत में सतत विकास शिक्षा की समस्याएँ।" *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, खंड 8(1), पृष्ठ 33-40।
7. भारतीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय। (2017)। *भारत की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट*। नई दिल्ली।
8. दवे, सुभाष (2022)। "सतत विकास हेतु शिक्षा नीति और उसका क्रियान्वयन।" *समाज और शिक्षा*, खंड 10(2), पृष्ठ 20-28।
9. युनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को)। (2020)। *सतत विकास के लिए शिक्षा: वैश्विक स्थिति रिपोर्ट*। पेरिस: यूनेस्को।